समास

समास में दो या अधिक शब्द साथ मिलते हैं और एक व्याकरणिक अर्थ व्यक्त करते हैं। इनके इसी परस्पर मेल को समास कहते हैं। इस प्रक्रिया से बने हुए शब्द को 'सामासिक शब्द' भी कहते हैं।

जब हम सामासिक शब्दों को अलग करने लगते हैं तो उसमें प्रत्यय विभक्ति उपसर्ग तथा अन्य शब्दों को नियमानुसार जोड़ते इसे ही समास विग्रह कहते हैं।

जैसे –

पितांबर -- पीला वस्त्र धारण करनेवाला
देशभक्त -- देश का भक्त
चिड़ीमार -- चिड़ियों को मारने वाला
महात्मा – महान आत्मा है जिसकी

समास के प्रकार – समास के 6 प्रकार है—

1) अव्ययीभाव समास
2) कर्मधारय समास
3) तत्पुरुष समास
4) द्विगु समास
5) द्वंद्व समास
6) बहुव्रीहि समास

1) अव्ययीभाव समास –

जिस समास का पहला शब्द अव्यय हो और उसी के अर्थ की प्रधानता हो उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं।

उदाहरणार्थ –

यथास्थान – अपने स्थान पर
यथासंभव – संभावना के अनुसार
यथाशक्ति – शक्ति के अनुसार
आजीवन – जीवन पर्यंत
निडर – जिसे डर ना हो
प्रत्यक्ष – आंखों के सामने

2) कर्मधारय समास –

कर्म को धारण करनेवाला कर्मधारय समास होता है। जिस समास का पहला पद विशेषण हो और विशेष्य के योग से बनता हो उसे कर्मधारय समास कहते हैं। इसमें दूसरे पद का अर्थ अधिक महत्वपूर्ण होता है। –

उदाहरणार्थ –

नीलकमल – नीला कमल
महापुरुष -- महान पुरुष

मेघवर्ण – मेघ के समान वर्ण
सज्जन – सत् जन

3) तत्पुरुष समास **–**

तत्पुरुष समास में दूसरा शब्द प्रधान होता है तथा पहला शब्द संज्ञा या विशेषण होता है। इन दोनों शब्दों के बीच में कारक चिन्ह [ने, को, से, द्वारा, का, की, के आदि] लुप्त रहते हैं।

जैसे **–**

वनवास – वनवास
रामराज्य – राम का राज्य
तुलसीकृत – तुलसी द्वारा कृत (रचित)

तत्पुरुष के **6** भेद है **–**

3.1) कर्मतत्पुरुष समास **–** इसमें विभक्ति चिन्ह को का लोप रहता है –

उदाहरणार्थ **–**

देशगत – देश को गत
परलोक गमन – परलोक को गमन
शरणागत – शरण को आगत
माखन चोर – माखन को चुराने वाला

3,2) करण तत्पुरुष समास **–** इसमें विभक्ति चिन्ह से, के द्वारा का लोप रहता है।

जैसे **–**

हस्तनिर्मित – हाथ से निर्मित
रेखांकित – रेखा से अंकित
गुणहीन – गुण से हिन

3.3) संप्रदान तत्पुरुष समास **–** इसमें के लिए कारक चिन्ह लुप्त रहता है।

जैसे **–**

देशभक्ति -- देश के लिए भक्ति
वृद्धाश्रम – वृद्धों के लिए आश्रम
युद्धभूमि – युद्ध के लिए भूमि

3.4) अपादान तत्पुरुष **–** इसमें कारक चिन्ह से अलग होने के अर्थ में का लोप रहता है।

जैसे **–**

भयमुक्त – भय से मुक्त
देश निकाला – देश से निकाला हुआ
जन्मांध – जन्म से अंधा

3.5) संबंध तत्पुरुष समास **–** इसमें का,की, के संबंध-कारक का लोप रहता है।
जैसे **–**

सेनानायक -- सेना का नायक
कृषिकन्या – कृषि की कन्या
राजसभा – राजा की सभा

3.6) अधिकरण तत्पुरुष समास **–** इसमें अर्थ स्पष्ट करने वाला में, पर कारक चिह्नों का लोप रहता है।
जैसे **–**

ग्रामवास – ग्रामों में वास
कविराज – कवियों में राजा
अग्निवास – अग्नि में वास

तत्पुरुष समास के उपभेद भी है उनमें नअ तत्पुरुष समास महत्वपूर्ण है –

- ❖ नअ तत्पुरुष **–** यह नकार का अर्थ व्यक्त करता है। इस शब्द के पहले या अ या अन लगने से बनता है। अ और अन नकार के अर्थ में प्रयुक्त होता है।

जैसे **–**

अनुचित – नहीं उचित
अनुपस्थित – नहीं उपस्थित
सुंदर – न सुंदर
अनहोनी – नहीं होनी

4) द्विगु समास **–** ऐसे समास जिसमें पहला शब्द संख्यावाचक हो, दूसरा शब्द मुख्य अर्थवाहक हो और दोनों मिलकर किसी समूह का अर्थ व्यक्त करते हो, द्विगु समास कहलाता है।
जैसे **–**

त्रिदेव – तीन देवों का समूह
नवरत्न – नवरत्नों का समूह
सप्तर्षी – सात ऋषियों का समूह
अष्टदल – आठ लोगों का समूह

5) द्वंद्व समास **–** जिस समास में सभी पद समान होते हैं तथा जिसका संयोजक शब्द "और" लुप्त रहता है उसे द्वंद्व समास कहते हैं।
जैसे **–**

सीताराम – सीता और राम
आगेपीछे – आगे और पीछे
भाईबहन – भाई और बहन
आजकल – आज और कल

6) बहुव्रीहि समास – जिसमें किसी भी शब्द की प्रधानता ना हो और दोनों शब्द मिलकर एक तीसरा नया अर्थ व्यक्त करते हो उसे बहूब्रिही समास कहते है।
जैसे –

दशानन – दस है आनन जिसके अर्थात रावण
लंबोदर – लंबा है उदर जिसका अर्थात गणेश जी
जितेंद्रिय – जीत ली है इंद्रिय जिसने अर्थात भीष्म
इंद्रजीत – जीत लिया है इंद्र को जिसने अर्थात मेघनाथ
चतुरानन – चार है आनन जिसके अर्थात ब्रह्मा
पितांबर – पीला है अंबर जिसका अर्थात श्रीकृष्ण
चंद्रशेखर – चंद्र है सिर पर जिसके अर्थात शिव
नीलांबर – नीला है अंबर जिसका अर्थात विष्णु